अमिताभ घोष के चुनिंदे उपन्यासों में पारिस्थितिक चिंतन: एक अध्ययन

अरुंधती मोहन
शोधार्थी
हिंदी विभाग,केरल विश्वविद्यालय-तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.आर.जयचंद्रन
आचार्य
हिंदी विभाग.विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

सारांश:-धरती मानव,प्रकृति,जीव जंतु, वनस्पति सभी का वास स्थान है। प्रधानमंत्री मोदी ने नयी दिल्ली में घटित G 20 में दोहराया कि हमारी अध्यक्षता का संदेश है **'एक पृथ्वी,एक कुटुम्ब एवं एक साझा भविष्य'।** अतः G20 घोषणा-पत्र सतत,सर्वसमावेशी,प्रकृति-केन्द्रित विकास के मॉडल पर आधारित है। इसमें विकास हेतु सतत हरित मार्ग की परिकल्पना की गई है। इसी के अंतर्गत भारत की पहल पर विश्व जैव ईंधन गठबंधन की शुरुआत भी हुई।शीर्ष नेताओं ने जलवायु मोर्चे सहित विश्व के समक्ष उपस्थित विभिन्न चुनौतियों से निपटने हेतु तत्काल पहल करने का आह्वान किया। निकट भविष्य में ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध वैश्विक मुहिम के लिए व्यापक रणनीति जैसे इस हेतु वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को तीन गुना करने आदि पर सहमति बनी है। कहने का तात्पर्य यह है कि environment sustainable development से हमारी आगामी भविष्य सुरक्षित है। इस अवसर पर अमिताभ घोष के उपन्यासों की चर्चा करना उचित होगा।

बीज शब्द:
परिस्थिति,उपनिवेश,वनस्पति,सततविकास,सागर,दावानल,द्वीप

भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यासकार अमिताभ घोष ने अपने उपन्यासों के ज़रिये मानव और प्रकृति के बीच का संबंध और मानव आप्रवास और परिस्थिति का संबंध इन बातों पर अपना मंतव्य प्रकट करते हैं।आइबिस त्रयी के अंतर्गत आनेवाले उपन्यास अफ़ीम सागर, नशे का दरिया, अग्नि वर्षा आदि में पारिस्थितिक सजगता निहित है।अफ़ीम सागर में ब्रिटीश उपनिवेश में अफीम खेती की ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं कथा के प्रारम्भ में ही भारत की पुण्य नदी गंगा के निकटवर्ती प्रदेशों में ओपियम की खेती करना और इस तरह की खेती से खाद्य पदार्थों की कमी पर लेखक लिखते हैं। कुछ सालों पहले जिन खेतों में अनाज,फल,फूल थे ,अब इनमें केवल अफीम का उत्पादन हैं। इसकी वजह से वहां के लोग बेहोश पड़ जाते हैं और शारीरिक मानसिक बीमारियों से जी रहे हैं। अफीम की खेती से पर्यावरण दूषित होने लगे और अफीम फैक्ट्री से निकलनेवाली विषैली पदार्थों और कूड़े कचरे से गंगा दूषित हो जाती हैं ।केवल मानव जीवन पर भी नहीं वहां की प्राणियों और जीव जंतुओं में भी अफ़ीम का कुप्रभाव है। उपन्यास के चर्मकार जाति के एक पात्र कलुआ अपने बैलों को अफ़ीम देते हैं।उपन्यास के एक सन्दर्भ में लेखक कहते हैं –"जब कलुआ ने अफ़ीम को अपने प्रयोग केलिये रखने के बजाय उसके दो टुकड़े करके अपने बैलों को खिला दिया,तो उसे अजीब सी खुशी हुई"[1]।

अमिताभ घोष के उपन्यास 'नशे का दरिया' में यदि एकतरफा भारत,अंग्रेज,चीन के ओपियम कारोबार से हुई पारिस्थितिक विषमताओं का वर्णन है तो दूसरी तरफ भारत और चीन के बीच के अभूतपूर्व वनस्पतियों का आयात निर्यात का वर्णन है।उपन्यास में अनाहिता नामक कश्ती से अफ़ीम को चीन लेकर जाते हैं,रेडरूथ नामक कश्ती चीन से वनस्पतियों को खोज निकलने केलिए जाते हैं तो आइबिस में कुलियों और लस्करों को साथ लेते हैं।लेखक उपन्यास के माध्यम से ओपियम से पर्यावरण की क्षति और समाज मे व्याप्त ऊबता को व्यक्त करते हैं।नशे का दरिया में पौलेट नामक नारी वनस्पति विज्ञान पर रुचि रखती है। वह पेरोज़ नामक वैज्ञानिक के साथ गोल्डन कैमेलिया जो एक विशेष चाय पत्ती है जिसको ढूंढ निकालने की कोशिश करती है।उपन्यास में eco critism के साथ साथ eco marx-ism का ज़िक्र भी है।एक उपनिवेश में प्रकृति से मिले हुए चीज़ों को किस हद तक प्रभाव डाल सकते हैं?इस सवाल का उत्तर नशे का दरिया में उपलब्ध है।पूंजी और परिस्थिति का संबंध और उनमें मानव का हस्तक्षेप आदि उपन्यास का विषय है।उनके चर्चित उपन्यास 'बंदूक द्वीप' gun island में ग्लोबल वार्मिंग का खुलंत चित्रण है ।कथाकार की राय में "अल्प हिम युग में प्रकृति में विनाश की शुरुआत थी। पृथ्वी का तापमान बढ़ गया।सत्रहवीं शताब्दी में सम्पूर्ण दुनिया में इसका असर हुआ। लोग भुखमरी,अकाल और महामारी से पीड़ित थे। कई जगहों पर भूकंप का तांडव था। इंग्लण्ड में गृह युद्ध में सर्वनाश हो गया।मध्य यूरोप तीस वर्षीय युद्धों से बर्बाद हो गया।तुर्की में सूखे से आग लगी और भारत में मुग़ल साम्राज्य में गरीबी और विद्रोह फ़ैल गए।"[2] लेखक का मतलब यह है कि अल्प,हिम युग आनेवाली पीढ़ियों केलिए एक चेतावनी है। उपन्यास के एक सन्दर्भ में लेखक कहते हैं "ऐसा लगता है मानो अल्प हिम युग अपनी कब्र से उठकर हमारी तरफ बढ़ रहा है।"[3] बन्दूक द्वीप उपन्यास का वातावरण सुंदरबन द्वीप समूह है।वहां की मनसा देवी मंदिर से जुड़ी हुई दन्त कथा की वास्तविकता खोजने केलिए नायक दीनदत्ता वेनिस पहुंचता है और उन्हें उस कथा के पीछे मानव तस्करी और पारिस्थितिक क्षति आदि ज्वलंत समस्याओं के तथ्य मिल जाते हैं।बन्दूक द्वीप उपन्यास में सुंदरबन द्वीप समूह में बसने वाले लोगों की ज़िन्दगी का आँखों देखा वर्णन है।सुंदरबन चक्रवात की भीषणता का मुख्य स्थान है।वहां १२ नवम्बर १९७० को एक चक्रवात बंगाल डेल्टा को चीरता हुआ आया था ।उस चक्रवात का नाम है 'भोला'।वह बीसवीं सदी की सबसे बड़ी आपदा थी।लगभग ५ लाख लोग मर

चुके।उस समय वहां राजनीतिक उथल पुथल चल रही थी।पूर्वी पाकिस्तान और पश्मिमी पाकिस्तान के बीच अस्तित्व की लडाई थी।पूर्वी पाकिस्तान अब बांग्लादेश नाम से जाने जाते हैं।बांग्लादेश राज्य में जब भीषण तूफ़ान का प्रकोप था।तब वहां की जनता भारत में घुस रहे थे।बांग्लादेश में खाने की कमी थी।बन्दुक द्वीप उपन्यास में अमिताभ जी भोला चक्रवात की भीषण स्थिति को तूलिका के सहारे व्यक्त करते हैं।कथा में होरेन नास्कार नामक एक मछुआरे ने चक्रवात का आँखों देखा वर्णन किया है।"काफी मुश्किल से होरेन ने नाव को भारत की सीमा के करीब ही रखा और जल्द ही वह बालू के एक टीले पर पहुंचे।जहाँ पहले गाव हुआ करता था,कुछ खंभों को छोड़कर वहां गाव का कुछ भी नहीं बचा था।तूफ़ान के बाद उतने.वाली समुद्री लहरों में एक एक घर बह गया था।"[4]बन्दूक द्वीप उपन्यास में एक अवसर पर आईला नामक एक चक्रवात, जो २००९ में सुंदरबन से टकराया,उनका वर्णन भी है।आईला के प्रभाव को रोकने केलिए सरकार की तरफ से प्रतिक्रियाएँ ज़ारी रही थी।कई लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले गए।इसीलिए मृत्यु की संख्या में कमी थी।लेकिन चक्रवात से एक मुकाबला यह थी कि ज़मीन जोतने योग्य नहीं है।उपजाऊ भूमि बंजर बन गयी।सुंदरबन चक्रवात से भीषण स्थिति में थी।समय समय होनेवाली प्राकृतिक आपदा से लोगों की ज़िन्दगी मुश्किल हो गयी।अपने गाँवों से निर्वासित होने पर वे लोग निश्चय किया कि कभी भी वापस न लौटेंगे।दरिद्रता के कारण लोग भीख मांगने लगे।आदमियों ने काम की तलाश में विदेश भागे।जवान लड़के और लड़कियाँ चोरी करते हैं।सुन्दरबन में कई लोग मछली पकड़कर जीवन यापन करते थे।लेकिन चक्रवात के असर से खाने केलिए भी मछली नहीं।लेखक कहते हैं "सुंदरबन में ज़िन्दगी इतनी मुश्किल हो गयी थी कि युवकों का पलायन साल दर साल बढ़ता जा रहा था"[5]।

बन्दूक द्वीप उपन्यास में प्रकृति के वनस्पतियों और जीवजंतुओं का ससूक्ष्म चित्रण है।अमिताभ घोष के उपन्यासों की यही विशषता है कि वे विज्ञान की अनेक शाखाओं के घटक तत्वों का विस्तृत व्याख्या करते हैं।साथ ही नरवंश शास्त्री होने के कारण अमिताभ जी को इन पर विशेष रुची होती है।बन्दूक द्वीप उपन्यास में सुंदरबन के मैन्ग्रोव ,साँप, डोल्फिन और अन्य कीड़ा जड़ियों की आतंरिक एवं बाह्य प्रकृति और उनकी जैविक संचरना आदि का विशद टीका है।उपन्यास के एक सन्दर्भ में दीनदत्ता जब मनसा मंदिर जाते हैं।तब उनके सहयोगी टीपू को एक कोबरा दंश लेता है।लेखक कहते हैं किंग कोबरा का शास्त्रीय नाम है ओफ़िओफ़गस हन्नाह।यह इंसानों को कम डंसता है।लेकिन डसने पर छोड़ता भी नहीं।इस उपन्यास में एक विशेष प्रजाति की डोल्फिन, जैसे कि, इरावदी डोल्फिन का चित्रण है। जिसका वैज्ञानिक नाम है ऑरकेला ब्रेवीरोस्ट्रिस।प्रकृति और मानव के बीच की अटूट रिश्ता उपन्यास की नब्ज़ पकडनेवाली है।लेखक की राय में "उसका रिश्ता इतना गहरा और पक्का था की इंसानों की भाषा में उसे दोस्ती कहना होगा।"[6]।इरावदी डोल्फिन के स्थानान्तरण को वैज्ञानिकों द्वारा रिकॉर्ड कर सकते हैं।बांग्लादेश में सुंदरबन द्वीप समूह में इरावदी डोल्फिन मिले जाते हैं।लेकिन उनकी संख्या में चढ़ाव है।एक कारण है कुछ मछुआरों की जाल में फँस जाते हैं और कुछ मोटरबोट और स्टीमर की चपेट में गई।अन्य कारण था समुद्र के पानी में बदलाव।पानी में रासायनिक पदार्थों की वृद्धि हो रही है।इसीलिए समुद्र में प्राणवायु की मात्रा बहुत कम है।इससे डोल्फिनों की मौत हो जाती हैं।लेखक का मतलब यह है कि "अगर आपको भी अपनी जानी पहचानी जगह छोडनी पडे और नए सिरे से शुरू करना पड़े तो तनाव तो होगा ना ? जिन जगहों को आप बेहतर जानते हैं अब आपके लिए भोजन नहीं दे सकती,आपको सुरक्षा नहीं दे सकतीं और आपको जिंदा रहने केलिए खाने केलिए नयी जगहें ढूँढनी होंगी।"[7] ।उपन्यासकार यहाँ परिस्थिति की सुरक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हैं। मानव जल,वायु,भोजन के बिना जिंदा नहीं रहता, उसी प्रकार प्रकृति की संतान हैं जीव जंतु। उनको भी भूख मिटाना है। प्रकृति ये सब देती हैं। लेकिन मानव की करतूतों से प्रकृति का विनाश हो रहा है।उपन्यास में सुंदरबन की प्रजातियों में विशेष डोल्फिनों की बीचिंग पर सब चिन्तित हैं।बीचिंग ऐसी एक प्रक्रिया है,डोल्फिन समुद्र तट पर झुण्ड होकर लेटते हैं।आजकल बीचिंग बढती जा रही हैं।इसका एक कारण यह है सोनार जैसे उपकरणों से निकलनेवाली ध्वनि।समुद्री स्तन जीवी अपने सुगम चाल चलन केलिए प्रतिध्वनि का निर्धारण इस्तेमाल करते हैं।जब कोई अन्य आवाज़ उनकी गति में आ जाते हैं,तब उनका रास्ता भटक जाता है और समुद्र तट पर आकर फंस जाते हैं।यदि भूमि के सतत विकास पर हम नहीं सोचे तो आगामी पीढ़ियों को जिंदा रहने केलिए यहाँ कुछ न होगा।धरती पर जीवन तो जल से उत्पन्न हुआ।लेकिन उसी जल अब विनाशकारी प्रलय बन जाता है।दुनिया के अंत कैसा होगा?इस प्रश्न का उत्तर कई पौराणिक, ऐतिहासिक,वैज्ञानिक ग्रंथों में उपलब्ध है।हिन्दू पुराणों के अनुसार प्रलय आ जायेगा और दुनिया ख़तम हो जाएगी।पारसी लोगों की धारणा है पृथ्वी के ऊपर पिघले धातुओं की नदियाँ बहेगी।ईसाइयों का मानना है कि मृत्यु सूखा और युद्ध से दुनिया का अंत होगा।प्राचीन इन्का सभ्यता का विचार है अंत भूकंप से होगा।उपन्यास के एक सन्दर्भ लेखक अमेरिका के लोस एंजेलिस के सूखे का वर्णन करते हैं।वहां मछली और केकड़ा मरे जाते हैं।बार्क बीटल्स [वल्क भृंग] नामक एक कीड़े पेड़ों को अंतर से खा लेते हैं।इसकी वजह से पेड़ शुष्क हो जाते हैं और जब अकाल के समय पेड़ों में आग लग जाते हैं।इसप्रकार जंगल का नाश हो जाता है।लोस एंजेलिस में दावानल हुआ था।बड़े पैमाने पर आग फैले गए और वहां के लोगों को सुरक्षित स्थानों की ओर ले चले।इसप्रकार दुनिया भर में हुए पारिस्थितिक समस्याओं का चित्रण उपन्यास का केंद्र विषय है।

अंततः कह सकते है कि अमिताभ घोष के उपन्यासों में पारिस्थितिक सजगता केंद्र बिंदु हैं।उन्होंने मानव जाति को चेतावनी देकर प्रकृति के सतत विकास पर ज़ोर डालते हैं।जलवायु परिवर्तन से हुई तमाम पारिस्थितिक संकटों का चित्रण करके यह स्थापित करते हैं कि मानव की करतूतों से दुनिया के सम्पूर्ण प्रजातियों का नाश हो रहा है।आइबिस त्रयी में जल प्रदूषण, मिट्टी प्रदूषण,वायु प्रदूषण,दावानल,तूफ़ान,चक्रवात आदि का सूष्मगत विश्लेषण है।बंदूक द्वीप उपन्यास में लोक कथा के अंतर्गत छिपे हुए पारिस्थितिक विचारों को लेखक ढूंढ निकलते हैं।उपन्यासकार नारी और प्रकृति के संबंध को स्थापित करके इको फेमिनिज्म को भी उपन्यासों का विषय बनाया है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1.अमिताभ घोष,अफ़ीम सागर, पृ सं 51
2.अमिताभ घोष, बन्दूक द्वीप, पृ सं ११९
3.वही, पृ सं १२२
4.वही, पृ सं १३
5.वही, पृ.सं ४७
6.वही, पृ सं ८८
7.वही, पृ सं ९३